Within the first two weeks of my appointment, I am already understanding what it means to take risks when you're at the helm. And I've come to understand that risk-taking is not an enjoyable enterprise; it means having to answer a lot of uncomfortable questions.

You think I'm ranting?

Of course I'm ranting! Isn't that what you cherish? “Bhai, print something controversial please!”

That's enough.

Call me a hypocrite, call me what you will. But it's a matter of time: it's been years since I courted controversy; those D-form days when everything was new and demanded change as I saw fit. But how long you and I have come since then. It's been 5 years now, and when I look back at those formative years of my life, I realize that everything I thought was wrong with this School was actually what made it so right. I detested PT, I hated the power the Prefects had over us. I couldn't stand going for activities I didn't want to participate in, but now I realize how important all this was in making me the person I am today. Till last year, I was a big fan of controversial articles in publications such as these, and pushed for them when and where I could. I thought that I could make change in the blink of an eye.

How wrong I was.

It is, at least according to me, a fact that responsibility is taken much for granted in this School. And I'm not talking about official responsibilities, but ethical ones. When one reaches their final year at Doon, the system begins to make sense. Everything we do, everything we achieve is a direct result of nameless people who are working for the greater good, sacrificing all they can to keep the wheels in motion. Quite recently, the Editor and I had a long chat with the Headmaster about the future of the Weekly. In that one hour, I began to realize the futility of the romantic notions of free speech that I used to harbor. In a school such as this, where students receive an education in the truest sense of the word, it is far easier to break walls than it is to build them. Criticizing the School for every fault one sees, I realized, serves absolutely nothing for its progress in the long run. Sure, critique has its place, but that place is the School Council. That place lies not in the public newspaper of this School.

It is no hidden fact that the School is in the news every other week. It's stature in the eyes of those outside matter as much (if not more) than those inside, and the most basic level, the development of the School depends on what outsiders think of it. Our school is not a closed environment, no matter how much we think it is. It is prone to opinion and controversy from the outside, and as such this mindless ranting from the inside is not going to help anyone.

I implore you to think before you indict the system that is shaping you even as you read this. Junior, senior, it doesn't matter. Everyone has a large role to play in our collective development, and it is time we started understanding our moral responsibilities.

But after all this, if you still wish to voice your thoughts, then do it the right way. After all, it is only when you follow the system that the system will be willing to follow you.
Athletics

The School Athletics Team participated in the Dehradun District Athletics Meet held at RIMC, Dehradun. Raj Kumar Vijay was adjudged the Best Athlete in the Under-20 category. The team won a total of 34 Medals and was ranked 1st in the Under-20 category.

Congratulations!

Squash

The School Squash Team participated in the IPSC Squash Tournament held at Scindia School, Gwalior from 8-10 November. The School was ranked 3rd in the Under-17 category.

Congratulations!

Table Tennis

The following are the results of the Inter-House Table Tennis Competition, 2014:

Juniors
1st: Jaipur
2nd: Oberoi
3rd: Hyderabad
4th: Kashmir
5th: Tata

Seniors
1st: Jaipur
2nd: Tata
3rd: Oberoi
4th: Hyderabad
5th: Kashmir

House Cup
1st: Jaipur
2nd: Oberoi
3rd: Hyderabad and Tata
4th: Kashmir

Congratulations!

Basketball

The following are the results of the Inter-House Basketball Competition, 2014:

Juniors
1st: Oberoi
2nd: Jaipur and Kashmir
3rd: Tata
4th: Hyderabad

Seniors
1st: Kashmir
2nd: Oberoi
3rd: Jaipur
4th: Tata
5th: Hyderabad

House Cup
1st: Oberoi
2nd: Kashmir
3rd: Jaipur
4th: Tata
5th: Hyderabad

Congratulations!

Debating

Arth Gupta has been appointed the School Debating Captain for the forthcoming year.

We wish him a fruitful tenure!

Appointments

The following have appointed as Boys-in-Charge for various activities for the forthcoming year:

Poets’ Society: Arnav Bhavanani and Vishesh Khetan
Ham Radio: Amal Agarwal
Robotics: Ayush Sarawgi
The Infinity: Shrey Aryan (Editor-in-Chief), Azan Ibrar (Chief-of-Production)
Econocrat: Sajal Bansal (Editor-in-Chief)
Economics Society: Tanmay Gupta
Senior English Debating Society: Devansh Agarwal
Junior English Debating Society: Yash Dewan
English Dramatics Society: Sahir Choudhary
Stock Exchange: Ayush Sarawgi
Video Club: Arnav Jain (re-appointed)
Photography: Amal Agarwal

We wish them a fruitful tenure!

The School was represented by Saksham Bhalotia, Slok Jain and Aditya Vardhan Bharadwaj at the Cambrian Hall Inter-School Quiz Competition held at Cambrian Hall School, Dehradun. The School stood 2nd in the competition.

Congratulations!
'ट्रायल्स' का दर

• निशान सिंह ब्रार

कहते हैं की बच्चन का समय जीवन का सबसे अच्छा समय होता है। न कोई बच्चा न किसी का दर बस अपनी ही धुन में समय बिताते हुए, आनंद लेते हुए वह किसी तरह दिन बीतते चले जाते हैं, पर्वत ही नहीं चलता। खेल और बच्चन का अपाक में गहरा सम्बन्ध होता है। खेल खेलते हुए तो बड़ा आनंद आता है पर इसी बीच पता ही नहीं चलता क्योंकि ट्रायल्स बस दो ही हमें दूर हैं। फिर सब सोचते हैं कि काश हम उस समय पढ़ ली होते जब हमारे अध्यापक हमसे हर समय पढ़ने के लिए कहा करते थे। हम सब यही सोचते रहते हैं कि काश समय लौट जाए और हम अच्छे से पढ़े।

ट्रायल्स का दर शुक्र होते ही हमारे मन में यह आशंका नहीं रहती कि हम कितना पढ़ चुके हैं, बल्कि यह सब सब कैसे हैं। वैसे तो बसों का वाचन समय, क्योंकि हमारे अध्यापकों के लिए समय है। सभी के मन में प्रश्न-प्रश्न के सवालों को लेकर उन्होंने ही बेहद ही ही वेदना होती है जितनी उतनी हुए पतनी को।

जैसे ही सारे अध्यापक ट्रायल्स का पाठ करते हैं, वैसे ही सब मन-ही-मन यही सोचते हैं, 'गरीब, हम यह सब कैसे करेंगे?, और यहीं पर उनका शिष्य वह होता है मन के बदल जाता है। हम विद्यार्थियों में दर की कोई सीमा नहीं है। हम अगर यानी तो उस दर को सकारात्मक मानकर अपने आत्म-विश्वास को बढ़ा सकते हैं, नहीं तो उस दर की नकारात्मक पहचान लेकर परिवारों से हमेशा दूर भागते रहेंगे। यहाँ तक कि कभी-कभी हम किसी विषय को तारीफ कह न समझने पर इतना घबराते जाते हैं कि हमदरम में अपने अध्यापक या एक दोस्त की मदद लेते पुराने जाते हैं। परन्तु हम उस विषय को दोबारा ध्यान से पढ़ें, शेर ही सकता है कि वह विषय हमें समझ में आने लगे। सच तो यह है कि परिवार देने से पूर्व, हमें विषय को समझना जरूरी है। ट्रायल्स के समय एक और दर होता है और वह है अध्याय पुस्तिकाओं का गायब होना, किताबों का गम हो जाना, लेखन-सामग्री का अव्याक्त अंतर्भाव हो जाना आदि। इस सब चीजों को गायब करने में उन लोगों का हार्द रहता है जो या तो पहले से इसका ध्यान नहीं करते या फिर जो दूसरी से सफलता से जबलते हैं और खुद उस क्रांति नहीं कायम कर पाते।

इसलिए यह जस्ती है की ट्रायल्स के शुरु होने से पहले हम अपने-आप को पूरी तरह से तैयार कर ले और हर मुश्किल का सकारात्मक रूप से निदेश होकर सामना करें, क्योंकि "दर के आगे जीत है।"
गा
बस एक एहसास से खालमयों को परखने की कोलशश कर रहा हूँ। आज हर भूल सुयह भी सोचे नहीं सकते और जबाब हमें दूंढना होगा।

सोचा न था

• राहुल भागवदगदानी

एश-ओ-आराम की फिन्डलुक बी को त्याग, वातावरण में जाकर, वहां खो जाने के विचार, मेरी चाहतों में इतना बदलाव, न जाने ऐसा कब हुआ, ऐसे हो जाएगा, यह भी कभी, सोचा न था। मेहनत और तपस्वी जी-टी की बड़े को आशीर्वाद और आर्म-विशाल के बल, कभी असफलता का चेतावनी ना देखा, ऐसी उंचाई में जोवान में भारी, यह भी कभी, सोचा न था। एक अभाव के बौठाके दुःख देख जो उसके मतभेद में चम्बली एक कर्नी, सोचा पेट अपना और परत्व कर भर लेगा, लेकिन उस से वह बड़ी पूँक्ता, यह भी सोचा न था।

मेरे आयार की कैसी निवृत्तता, शतरंज के एक मोहरे की तरह, युद्ध को हमेशा ही बेघर और दगड़वाज़ी के चंगुल में पाया, ऐसी भी परिस्थितियां सहनी पढ़ जाएगी, यह भी मैंने कभी सोचा न था। सबसे ऊपर उभरने को लिया, झुठ का जब साथ दिया, उंचाई पर पहुँचने के नशे में निर्माण सी पृथक गई, झुठ-फोरेब का विचार भी न किया, एक के बाद एक, सौ झुठ का साथ देना पड़ जाएगा, यह भी, कभी सोचा न था।

आज हर भूल सुधारने की कोशिश कर रहा हूँ, खामियों को परखने की कोशिश कर रहा हूँ, बस एक एहसास से सुधार की इतनी भीमकर इतना पैदा हो जाएगी, ऐसा भी, कभी सोचा न था।

चौर की दास्तान

• यतनंश चावला

घरबाट हुए, हांसिंह सेंसरों और तेज धड़कन की नृजली, आदर्श के बीच, पूँक-पूँक कर, जांच-जांच कर रखता वह अपने कदम।

यह बात बड़ी अच्छी तरह जानता है - हर मोड़ पर मंडरा रहा है पकड़े जाने का खतरा। धक-धक धड़कन ने शरीर मचा दिया है! कानों तक में सुनाई देखा है उसे अपने जिस्म में बहते खुन की चेतावनी।

छिकी को हलके से खोल कर, आस-पास नज़रे दौड़ा कर, कमरे में दबे पाँव रखता कदम।

छिकी चू.SSS कर के बंद हो जाता है।

रात के सन्नाटे में वह आवाज और भी शांति और सिद्धांत बैठा कर गई। चौर के माथे पर पसीने की चुंबन-छलक गई।

बाजू वाले कमरे की कहीं की टिक-टिक पूरे घर को गूँज से बर जाते हैं।

कापने हाथों पर दस्ताने चढ़ाकर, तीव्र गति से तिजोरी की ओर बढ़ता है।

बड़े पैमेंट के साथ, ताले तोड़ने की कला को काम में लाता है..

तिजोरी 'टक' कर देने का खून जाता है, जोश और खुशी देने के धड़कन और तेज़ हो जाता है। बस्ता भर घर की ओर चला तो सबूत के लिए पीछे मुड़ा, सोचा कभी कोई हो न उसके खिलाफ।

इस चक्र में कभी पहुँच न जाए वह अपनी ससुराल।

एक किरिता बच्चों की सी...
The Inter House Basketball Competition has always been a highly anticipated event in School. It is one which involves a large number of boys from every house and requires everyone to, literally, soar higher. This year, as was witnessed by a large number of people, the event proved to much more intense and hard-fought as compared to previous years. The numbering of jerseys, replacing worn out shoes with new ones and rumours regarding the victors of the competition had already created quite a buzz around campus in the run-up to the competition. Practices had started in the beginning of the year and the constant hard work put in by the juniors and seniors resulted in some very interesting matches.

The competition commenced with the Juniors Category in which great talent and skill was seen in the form of Suryansh Kainthola, Jaideep Gill, Arhant Khullar and Salmaan Mallick. The matches were close and high scoring. Never before did Junior matches have scores crossing fifty points and, according to me, the highlight of the Juniors competition was the Juniors’ A match between Jaipur and Oberoi house. The performance of both teams was electrifying, with the final score reading 66-65. Having won all their matches, Oberoi house emerged as the deserving winners of the Juniors Cup.

If the Juniors matches were thought to be so competitive, one had to be on court to experience the intensity that enveloped the Seniors matches. Tremendous skill and hard work aside, each player came onto the court absolutely determined to perform well and emerge as part of the winning team. Despite injuries and the general fatigue that such a competition brings with it, the players displayed immense spirit and passion for the sport. I can say that the intensity which characterized each match was unique to this competition, resulting in some extremely close games, with barely a point or two separating the victor from the vanquished. The one match that kept everyone on the edge of their seats was the final between two giants of the competition: Oberoi House and Kashmir House. The momentous showdown saw some quick, fluent scoring by both sides as well as some amazing defensive play. For some players it was not only the last match of the season but also their last Basketball match in School. So this match had the be the stuff dreams are made of and hence, there was no holding back. In a nail biting finish, fortune favoured Kashmir House, and they went on to lift the Seniors Cup, with Oberoi house finishing a close second.

The Senior competition saw the dominance of players like Suhel Karara, Tanishq Agarwala, Atharva Shree Matta, Vatsal Agarwal, Pranjalya Shukla and Ruhaan Dev Tyagi. They were able to inspire the juniors and hopefully the level of competition in School will further improve after this year’s performances. In the House Cup, Oberoi House emerged victorious with Kashmir house rolling in at second. All in all, this year’s basketball competition effectively managed to mirror the players’ hard work in their performances. For us, it was truly a treat to participate and play in this year’s competition.
The Cruciverbalist's Corner

Dear Editor,

Last Saturday, much to my amusement, I was treated to a delight on the breakfast table, as I came across an issue of the Weekly that was long overdue. It was the kind that engaged members from all corners of our diversified community, and what’s more is that it raised the discourse on issues revolving around School. Right from the timeless Point-Counterpoint, which saw a student debate PBR on a highly pertinent issue that concerns many of us, to the article by PKB that highlighted a pressing issue that requires our immediate attention, I think the issue exemplified everything that the Weekly in our School ought to stand for.

I understand that this issue was the first of the newly appointed Board, with a new Editor-in-Chief at the helm. To that end, allow me to also convey my heartiest compliments to them on a successful and groundbreaking ‘8-pager.’ As someone who has been a member of the Board until very recently, I know that this is no ordinary feat, for I cannot remember the last time we had a Weekly as comprehensive as this one. I also wouldn’t be lying if I said that part of me is glad that I have another term left on campus, for I would be around to witness the Weekly grow and regain its stature, something that even our erstwhile Editor-in-Chief pointed out in his Founder’s Editorial, is being lost.

I like the idea of including what Arnaav described to be the ‘Interpretations.’ It just goes to show how we, as a community, have evolved to a point where we can appreciate and even critique works of literature. It is something that we IB-kids do in our examinations in any case, and it would be unthinking of us to not present the same in our School newspaper. I look forward to an interesting year in the grand history of this publication, one that will hopefully see it transform once again into the emblem of intellectual discourse in Chandbagh.

A dear friend of the Weekly’s,
Pulkit Agarwal

Across
1. showing sudden and impatient irritation
8. to read carefully
10. the art of placing two things next to each other for comparison
11. to seize by force, take possession of without right
12. short, abrupt and dismissive

Down
2. an original model or pattern
3. a rebel, someone who rebels against the government
4. a degree of freedom of action or thought
5. frantic, frenzied
6. utter destruction or ruin
7. outstandingly bad, outrageous
9. whiny, complaining

Answers to Last Week’s Crossword:

Across
2. Dogma 7. Profligate
3. Condone 11. Harbinger

Down
1. Lampoon 8. Virulent
4. Epigram 9. Cacophony
5. Firmament 10. Abdicate

Source: http://worksheets.theteacherscorner.net/make-your-own/crossword/

The Week Gone By

Rishabh Agarwal

Well, Trials are here, and the Rawat Band next door is being absolutely inconsiderate towards the unfortunate Oberoi House students trying to crack ‘complex numbers’ at one in the morning. In fact, the last few classes saw teachers shooting masses of undifferentiated information at the students in a hopeless attempt to complete the syllabi on time. Speaking of the last few classes, the SCs clearly showed us at the semi-change that they are better at looking absurd than the people working at Disneyland! And as always, the boxers in the ring humbled the audience; though there were some of us hopefuls who were humbled by the unconventional ‘leadership interviews’ held during the bouts. Truly, best of luck to all!

Letter to the Editor

Dear Editor,

Last Saturday, much to my amusement, I was treated to a delight on the breakfast table, as I came across an issue of the Weekly that was long overdue. It was the kind that engaged members from all corners of our diversified community, and what’s more is that it raised the discourse on issues revolving around School. Right from the timeless Point-Counterpoint, which saw a student debate PBR on a highly pertinent issue that concerns many of us, to the article by PKB that highlighted a pressing issue that requires our immediate attention, I think the issue exemplified everything that the Weekly in our School ought to stand for.

I understand that this issue was the first of the newly appointed Board, with a new Editor-in-Chief at the helm. To that end, allow me to also convey my heartiest compliments to them on a successful and groundbreaking ‘8-pager.’ As someone who has been a member of the Board until very recently, I know that this is no ordinary feat, for I cannot remember the last time we had a Weekly as comprehensive as this one. I also wouldn’t be lying if I said that part of me is glad that I have another term left on campus, for I would be around to witness the Weekly grow and regain its stature, something that even our erstwhile Editor-in-Chief pointed out in his Founder’s Editorial, is being lost.

I like the idea of including what Arnaav described to be the ‘Interpretations.’ It just goes to show how we, as a community, have evolved to a point where we can appreciate and even critique works of literature. It is something that we IB-kids do in our examinations in any case, and it would be unthinking of us to not present the same in our School newspaper. I look forward to an interesting year in the grand history of this publication, one that will hopefully see it transform once again into the emblem of intellectual discourse in Chandbagh.

A dear friend of the Weekly’s,
Pulkit Agarwal

Online Edition: http://worksheets.theteacherscorner.net/make-your-own/crossword/